अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । बुधवार, 20 मार्च 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

अनिवार्य रूप से समृद्धि किसी राजनीतिक अभियान का पहला विषय है...
- वुडरो विल्सन

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

गोवा के नए मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत के समक्ष मनोहर परिकर द्वारा तय किए गए पैमानों पर खरा उतरने की चुनौती होगी। उनकी पहली परीक्षा निकट भविष्य में ही होनी है, जब अगले महीने विधानसभा के उपचुनाव होंगे।

परिकर के उत्तराधिकारी

गोवा के नए मुख्यमंत्री के रूप में कमान संभालने वाले प्रमोद सावंत और उनके मंत्रिमंडल ने जिस तरह से मंगलवार तड़के 1.50 बजे शपथ ग्रहण की, उससे ही पता चलता है कि मनोहर परिकर के उत्तराधिकारी का चयन भाजपा और उसके सहयोगी दलों के लिए कितना कठिन रहा होगा। वास्तव में परिकर के निधन से गोवा की सियासत में जो शून्य उभरा है, उसे भरने में वक्त लगेगा। महज 40 विधानसभा सीटों वाले एक छोटे से राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में काम करते हुए परिकर ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जैसी पहचान बनाई, वैसे उदाहरण विरल हैं। यह उनकी प्रशासनिक और सबको साथ लेकर चलने की क्षमता ही थी, जिसके कारण उन्हें प्रधानमंत्री मोदी ने रक्षा मंत्री के रूप में जिम्मेदारी दी, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया भी। फरवरी, 2017 के विधानसभा चुनाव के बाद उन्हें मुख्यमंत्री के रूप में गोवा लौटना पड़ा था। दरअसल यह परिकर ही थे, जिन्होंने भाजपा को महज 13 सीटें मिलने के बावजूद महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी (एमजीएम) और गोवा फ्रंट पार्टी (जीएफपी) तथा निर्दलीय विधायकों का समर्थन जुटाया था। वरना उस चुनाव में 17 सीटों के साथ कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी! असल में जब परिकर कैंसर से लड़ रहे थे, तभी गोवा में सियासी उठा-पटक तेज हो गई थी और कांग्रेस कोशिश कर रही थी कि एमजीएम और जीएफपी उसके साथ आ जाएं। मगर ताजा घटनाक्रम इस बात का एक और उदाहरण है कि कांग्रेस छोटे दलों के साथ गठबंधन बनाने में कमजोर है। इसके साथ यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कांग्रेस के तीन विधायक पहले ही उससे टूट चुके हैं। दूसरी ओर गोवा के नवगठित मंत्रिमंडल में एमजीएम के सुदीन धवलीकर और जीएफपी के विजय सरदेसाई के रूप में दो-दो उपमुख्यमंत्रियों और कुल 12 मंत्रियों की मौजूदगी बताती है कि भाजपा किस तरह से छोटे और सहयोगी दलों को जोड़े रखने में कामयाब हो रही है। प्रमोद सावंत को खुद परिकर ने ही तराशा था और आगे बढ़ाया था, जिससे भाजपा नेतृत्व को उन्हें उनका उत्तराधिकारी चुनने में मदद मिली होगी। दो बार के विधायक सावंत विधानसभा अध्यक्ष के रूप में काम संभाल चुके हैं। मगर उनके समक्ष मनोहर परिकर द्वारा तय किए गए पैमानों पर खरा उतरने की चुनौती होगी। उनकी पहली परीक्षा निकट भविष्य में ही होनी है, जब अगले महीने विधानसभा के उपचुनाव होंगे।

चुनावी व्यवस्था का समानांतर तंत्र

गैर-कानूनी तरीके से किए जा रहे रोड शो और बाइक रैलियों पर चुनाव आयोग द्वारा प्रतिबंध लगाने से जनबल और धनबल पर लगाम लगने के साथ पर्यावरण संरक्षण भी हो सकेगा।

विराग गुप्ता

वसंत ऋतु और कुंभ के बाद अब चुनावों का शाही पर्व शुरू हो गया है। नियमों के अनुसार एक प्रत्याशी 70 लाख रुपये से ज्यादा खर्च नहीं कर सकता। इसके हिसाब से गंभीर प्रत्याशियों द्वारा दो हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का खर्च नहीं होना चाहिए। जबकि कॉरनेगी थिंक टैंक संस्था के अनुसार, इस बार के चुनावों में 50 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का खर्च होने का अनुमान है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद चुनाव आयोग ने प्रत्याशियों को अब पिछले पांच साल के आयकर के ब्यौरे देने का निर्देश जारी किया है। तय सीमा से ज्यादा किए गए खर्चों का ब्यौरा जब चुनाव आयोग को ही नहीं दिया जाता, तो फिर आयकर विभाग इसकी जांच कैसे करेगा?

देश में 2,000 से ज्यादा पंजीकृत राजनीतिक दल हैं, जिनको अपनी आमदनी पर आयकर की छूट मिलती है। इन तमाम दलों द्वारा दो हजार रुपये तक का नकद चंदा लेने के नियम की आड़ में गुमनाम समर्थकों का चंदा दिखाकर अरबों रुपये के कालेधन को राजनीति में खपाया जाता है। नोटबंदी के दौरान आम जनता को लाख तकलीफ हुई हों, लेकिन राजनीतिक दलों के खातों में बड़ी नकदी जमा होने के बावजूद, उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई नहीं की गई। इन सारी छूटों के बावजूद अनेक नेता चुनावी शपथ-पत्र में पैन नंबर भी नहीं दर्शाते और ऐसे गंभीर अपराधों के लिए उनके खिलाफ अभियोजन की कार्यवाही भी नहीं होती। देश सेवा के नाम पर अनेक छूट और लाभ पाने वाले राजनीतिक दलों के खातों का यदि सीएजी ऑडिट शुरू हो जाए, तो इस धांधली पर लगाम लग सकती है!

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने अनेक फैसलों में राजनीति और अपराध के भ्रष्टतंत्र को देश के लिए दीमक बताया है। दूसरी तरफ लोकतंत्र के चौकीदारों द्वारा चुनाव को केंद्रीकृत व्यापार बना दिया गया है। सांसद और विधायक जीतने के बाद कई करोड़ की निधियों का स्वामित्व हासिल करने के साथ आजीवन पेंशन के हकदार बन जाते हैं। जबकि समर्थकों को सरकारी विभाग की ठेकेदारी, माइनिंग की लीज, शराब के ठेके जैसे बेनामी लाभों से नवाज दिया जाता है।

डिजिटल युग में चुनाव आयोग अब भी हाथी और कमल के प्रतीकों को ढकने में व्यस्त है। सरकारी वेबसाइटों में मंत्रियों की फोटो हटाई जा रही हैं। चुनावी आचार संहिता के कागजी अनुपालन के दौर में सरकारी कार्य के लिए बनाए गए फेसबुक और ट्विटर खातों से सभी मंत्रियों का चित्र चुनावी अधिसूचना लगने के बाद क्यों नहीं हटाना चाहिए। दिल्ली उच्च न्यायालय में के. एन. गोविंदाचार्य की याचिका के बाद सोशल मीडिया के नियमन हेतु अनेक कानून बने। चुनाव आयोग ने भी हमारे प्रतिवेदन के बाद 2013 में इस बारे में अनेक नियम बनाए, जिनका अभी तक अनुपालन नहीं हो रहा है। पिछले आम चुनावों में सोशल मीडिया के माध्यम से विज्ञापन और प्रचार पर 10 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का खर्च हुआ, लेकिन सिर्फ पांच सांसदों ने इस बारे में चुनाव आयोग को खर्चों का ब्यौरा दिया।

इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे देश में फेक न्यूज का जवाबी शोर है, फिर इसके खर्चों के बारे में नेताओं और दलों के खाते क्यों मौन हैं। पूरे देश में सोशल मीडिया के माध्यम से चुनावी प्रचार जोरों पर है। भारत में शिकायत अधिकारी नियुक्त कराने के साथ चुनावी खर्चों की जानकारी के लिए चुनाव आयोग सोशल मीडिया कंपनियों को बाध्य क्यों नहीं करता? दिल्ली में चुनाव आयोग का मुख्यालय है, जहां पर सोशल मीडिया के माध्यम से विज्ञापनों के अनुमोदन के लिए सिर्फ 17 आवेदन आए हैं। चुनाव आयोग ने बम्बई उच्च न्यायालय के सम्मुख इन नियमों के अनुपालन के लिए शपथ-पत्र दिया है। आयोग द्वारा राजनीतिक दलों के आईटी सेल में छापे की कार्रवाई की जाए तो देश में चुनावी व्यवस्था का समानांतर तंत्र बेनकाब होने के साथ लोकतंत्र का शुद्धीकरण भी हो सकता है।

साड़ी, शराब और नगदी की भेंट पर काफी बहस होती है पर बाइक रैली, रोड शो और सोशल मीडिया के गेम चेंजर पर चुनाव आयोग की वक्र दृष्टि क्यों नहीं पड़ती? पूरे चुनाव के दौरान रोड शो और बाइक रैलियों में वाहन, डीजल-पेट्रोल और समर्थकों की फौज जुटाने में अरबों रुपये खर्च होते हैं। नियमों के अनुसार सभी गाड़ियों और चालकों के बारे में निर्वाचन अधिकारी को पहले से सूचना देने के साथ नियमानुसार अनुमति भी ली जानी चाहिए। रोड शो के एक काफिले में दस से ज्यादा गाड़ियां नहीं हो सकतीं। सड़कों पर रोड शो करने के दौरान आधी सड़क खाली रहनी चाहिए। वाहनों को शाही अंदाज में बदलकर चुनावों में इस्तेमाल किए जाने वाले रथ राजनीतिक जुगाड़ की पराकाष्ठा है। सीट बेल्ट और हेलमेट नहीं लगाने पर देश में करोड़ों चालान होते हैं, तो फिर स्टार प्रचारकों को रथ की छत में चढ़कर शाही रोड शो की इजाजत क्यों मिलती है? पुलवामा में सीआरपीएफ के सुरक्षित काफिले पर एक आतंकी ने हमला करके हमारे अनेक जवानों को शहीद कर दिया। भारत में राजीव गांधी और पाकिस्तान में बेनजीर भुट्टो की चुनाव प्रचार के दौरान ही हत्या हुई थी। इन आतंकी खतरों की वजह से भारत में वीवीआईपी और स्टार प्रचारकों को एसपीजी और जेड सुरक्षा मिलती है। गैर-कानूनी तरीके से किए जा रहे रोड शो और बाइक रैलियों पर चुनाव आयोग द्वारा प्रतिबंध लगाने से जनबल और धनबल पर लगाम लगने के साथ पर्यावरण संरक्षण भी हो सकेगा।

चुनाव आयोग को संविधान के अनुच्छेद-324 के तहत निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव कराने के लिए समस्त अधिकार मिले हैं। पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त टीएन शेषन ने इसी कानूनी व्यवस्था के तहत भ्रष्ट राजनीतिक तंत्र में हड़कंप मचा दिया था। परंतु उसके बाद से चुनाव आयोग किसी भी बड़ी कार्रवाई के लिए कानूनों में बदलाव हेतु सरकार के सामने नतमस्तक होता गया। अभी तक का तर्जुबा यह बताता है कि चुनावों के दौरान कानून डाल-डाल तो नेता पात-पात होते हैं। शाही रोड शो और सोशल मीडिया की मार्केटिंग की बदौलत चुने गए लचर जनप्रतिनिधियों से भी आने वाले दौर में, चुनाव सुधारों के लिए सख्त नियमों को बनाने की अपेक्षा कैसे की जाए?

लेखक सुप्रीम कोर्ट में वकील और 'इलेक्शन ऑन दी रोड्स' पुस्तक के लेखक हैं।

अंतर्ध्वनि

>> चंद्रकांत देवताले

कविता स्मृति और स्वप्न के बीच काम करती है

जब 1952 में मैंने कविता लिखी, तो उस वक्त यह तो समझ में आ गया कि यह कविता है। वह अपने दोस्तों को सुनाई, संभाल कर रखा। 1953 में हाई स्कूल मैगजीन में मेरी प्रथम कविता छपी, मजदूर शीर्षक था। फिर 1954 में नई दुनिया में कविता छपी। फिर ज्ञानोदय और धर्मयुग में भी कविताएं छपीं। हम कवि गोष्ठियां करने लगे। अपने को बचाते हुए और अपने से प्रेम करते हुए ही मुझे लगा कि हम जीवन से प्रेम करते हैं। समझ जैसे बढ़ती गई, किताबों और अनुभव से इस प्रेम का अर्थ भी बदलता गया।

यह विस्तार पाता गया। फिर अपने और आसपास के जीवन संघर्ष को देख जो कुछ आ वा जें - प्र ति क्रि या एं उठतीं, उन्हें सुनने की इच्छा ने मेरे अंदर के कवि की परवरिश की होगी, ऐसा लगता है। जिज्ञासा और प्रश्न करने की आदत ने भी हवा-पानी दिया होगा। किसी भी कलाकार के लिए बचपन के दिन बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। बचपन में ही एक तरह से तय हो जाता है कि हमें क्या होना है। गांव मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित करता था, अब भी करता है। तब गांव में बहुत कुछ रोमांटिक भी लगता था और बहुत कुछ कष्टप्रद भी होता था। सबसे बड़ी बात यह थी कि सफाई के लिए जो स्वीपर आती थी, उसे हम मौसी कहते थे और नाई को मामा। तो जात-पात, ऊंच-नीच नहीं देखना-ये संस्कार मुझ पर तभी के हैं। मुझे तब से यह पता है कि मनुष्यों के अंदर छोटा, अस्पृश्य कुछ नहीं होता। कवि को साधु, संत, सज्जन पुरुष समझना गलत धारणा है। आम आदमी की शक्ति और कमजोरियां उसमें भी होती हैं। कवि भी एक आदमी की तरह होता है। कवि कविताओं में जितना होता है, उतना अपने जीवन में पाना चाहता है। कविता स्मृति और स्वप्न के बीच काम करती है। कवि स्मृति और स्वप्न के बीच एक तरह का ताना-बाना बुनता है और उससे ही कविता बनती है।

-हिंदी के दिवंगत साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> ए वी पुरुषोत्तम कामथ

शहर के मध्य में बन गया हरा भरा जंगल

तकरीबन साढ़े छह सौ साल पहले पुर्तगालियों के गोवा आने के बाद जब बड़े पैमाने पर धर्मांतरण शुरू हुआ, तो बड़ी संख्या में लोग अलग-अलग समूहों में वहां से भागकर केरल के तटीय इलाकों में जा बसे थे। मेरे पूर्वज भी ऐसे ही एक समूह के साथ केरल आए थे। बचपन में मेरी मां कहानियां सुनाती थीं कि किस तरह से कोचि के महाराजा ने उनके समुदाय का स्वागत किया था। 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मेरे पिता ने एर्नाकुलम के राजा का एक आरामगृह खरीदा था और उसे घर में तब्दील कर दिया था, जिसमें आज भी हमारा परिवार रहता है। पारंपरिक रूप से हमारा परिवार खेती से जुड़ा रहा है। पर पढ़ाई के बाद मैं बैंकिंग के क्षेत्र में चला गया। नौकरी के दौरान मुझे काफी यात्राएं करनी पड़ती थीं। ऐसी ही यात्राओं के दौरान मुझे औषधीय पौधों को एकत्र करने का फितुर सवार हुआ। वैसे भी केरल में ऐसे औषधीय पेड़-पौधों की बहुतायत है। 1984 में मेरी मां का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा तो, मैंने घर पर रहकर उनकी सेवा करने का फैसला किया और बैंक की नौकरी छोड़ दी। घर लौटते ही मैं खेती से जुड़ गया। केरल तो यों भी हरा-भरा है। हमारे पुश्तैनी घर के परिसर में ही हमारे पास दो एकड़ जमीन थी, जिसे हमने हरे-भरे जंगल में तब्दील कर दिया। शुरुआत तो मैंने धान और नारियल की खेती से की थी। लेकिन उसी दौरान मैंने दुर्लभ मसालों के पौधे और चिकित्सा में काम आने वाले पौधों पर ध्यान देना शुरू किया। नतीजतन आज हमारे फार्म में विभिन्न तरह के फलों के पेड़ों के अलावा तकरीबन दो हजार किस्म के औषधीय पौधे और पेड़ लगे हुए हैं। इनमें दुर्लभ किस्म के पौधे और जड़ी बूटियां, और मसाले भी शामिल हैं। 1996 में मैंने केमिकल का इस्तेमाल पूरी तरह से बंद कर दिया और पूरी तरह से वानिकी के काम में जुट गया। हमारे फार्म में 42 किस्म के तो आम ही हैं! इसके अलावा कटहल, स्ट्राबरी, केला, सेब, ब्लैकबेरी, अदरक, हल्दी, पुदीना जैसे उपयोगी फलों और मसालों की कोई कमी नहीं है। सिर्फ दो एकड़ में ही ऐसी विविधता देखकर लोगों को हैरत होती है। यह मेरी पैंतीस वर्षों की मेहनत और लगन का नतीजा है। हमारे इस फार्म को एलुंगल फार्म के नाम से जाना जाता है। यहां हर पेड़ के सामने तख्ती लगी हुई है, जिस पर वैज्ञानिक नाम के साथ मलयाली नाम भी लिखा हुआ है। इससे यहां आने वाले विज्ञान और आयुर्वेद के विद्यार्थियों को मदद मिलती है। हमारे फार्म में दो देसी कासरगोड़ गाय और मुर्गियां भी हैं। मेट्रो स्टेशन से मुश्किल से एक फर्लांग दूर स्थित हमारे इस फार्म की एक खासियत यह भी है कि यह अनेक प्रवासी पक्षियों और तितलियों का भी बसेरा है। केंद्र सरकार ने अपनी पहल आत्मा (एग्रीकल्चर टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एजेंसी) के तहत इसे छोटे किसानों को प्रेरित करने के लिए आदर्श माना है। मुझे संतोष है कि केरल के बायोडायवर्सिटी अवार्ड और वनमित्र जैसे पुरस्कार से हमारे काम को सराहा गया है। पर जिस तरह शहरों में बेतरतीब विकास हो रहे हैं, उसमें भूमाफिया की नजर भी ऐसी हरी-भरी जगहों पर रहती है। हम उस दौर में जी रहे हैं, जिसमें हर चीज को आर्थिक गणना से आंका जाता है। कल्पना कीजिए कि किसी मनुष्य को एक दिन में जिंदा रहने के लिए तीन सिलेंडर ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है। यदि एक सिलेंडर का दाम 800 रुपये हो, तो एक दिन में 2400 रुपये लगेंगे और एक वर्ष में करीब 8,64,000 रुपये! जबकि पेड़ आपको मुफ्त में ऑक्सीजन देते हैं। मेरा सिर्फ यही संदेश है कि पेड़ लगाइए और खुद को बचाइए।

हमारे फार्म में विभिन्न फलों के पेड़ों के अलावा करीब दो हजार किस्म के औषधीय पौधे लगे हुए हैं।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

सामाजिक चेतना का आंदोलन

'मैं भी चौकीदार' भारत की समस्त बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का एक सामाजिक अभियंत्र है। इसकी गूंज सिर्फ चुनाव तक ही सुनाई नहीं देगी, आने वाले कई वर्षों तक यह अभियान चलता रहेगा और देश का भविष्य नए तरीके से लिखा जाएगा।

एक बार महात्मा गांधी ने कहा था, 'नेतृत्व लोगों को साथ लेकर चलने का नाम है।' बापू की यह बात भारतीय राजनीति में लोगों ने सुनी तो बहुत, लेकिन इस पर शायद ही किसी ने अमल किया। संभवतः पहली बार नरेंद्र मोदी ने बापू के इस संदेश का अक्षरशः पालन किया है। कनेक्ट विद पीपुल नरेंद्र मोदी के जीवन का मूल मंत्र रहा है। अभी से नहीं, छात्र और संघ जीवन से ही और उसके बाद राजनीतिक जीवन में भी। लोगों से जुड़ने और समाज की चेतना को झकझोरने का काम मोदी के व्यक्तित्व का हिस्सा बन गया है। लोकसभा चुनाव से पहले जहां कांग्रेस समेत पूरा विपक्ष नकारात्मक नारे और मुद्दे गढ़ रहा है, वहीं मोदी ने 'मैं भी चौकीदार' नामक सामाजिक आंदोलन खड़ा कर पूरे देश को उसका भागीदार बना दिया है। केवल दो दिनों में लाखों लोगों ने इससे खुद को जोड़ लिया है। इसमें केवल भाजपा के ही नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग और हर क्षेत्र के लोग शामिल हैं। यह चुनाव में जा रहे देश को खुद की जिम्मेदारियों का बोध कराने और एक दूसरे को अच्छे कामों के लिए प्रेरित करने का सहज प्रयास है।

जब मोदी ने 'मैं भी चौकीदार' नाम का हैसटैग डालकर ट्वीट किया तो साथ में यह भी लिखा- 'आपका चौकीदार दृढ़ता से खड़ा है और देश की सेवा कर रहा है। लेकिन वह इस काम में अकेले नहीं है। हर वह आदमी उसके साथ खड़ा है, जो भ्रष्टाचार, गंदगी और सामाजिक बुराइयों से लड़ रहा है। आज हर भारतीय कह रहा है, 'मैं भी चौकीदार'। मोदी ने 'मैं भी चौकीदार' का आह्वान इसीलिए किया, ताकि देश की जनता यह माने कि जो भी मोदी सरकार की उपलब्धि है, वह व्यक्ति नरेंद्र मोदी की नहीं, बल्कि हर नागरिक की उपलब्धि है।

अनिल बलूनी
भाजपा प्रवक्ता व राज्यसभा सदस्य

वर्ष 2014 में जब मोदी प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली बार लाल किले से देश को संबोधित कर रहे थे, तब भी उन्होंने कहा था कि बापू का सपना था कि देश में स्वच्छता का आंदोलन सबके जीवन का हिस्सा बने और वह बन गया। मोदी ने जिस तरह खुद आगे बढ़ हाथ में झाड़ू लिए सड़क, नाले-नदी और पार्कों की सफाई का अभियान चलाया, उससे पूरा देश एक साथ जाग्रत हो उठा।

यह बेहद राहत की बात है कि देश का नागरिक विपक्षी पार्टियों के नकारात्मक रवैये को गले से नीचे नहीं उतरने देता, क्योंकि देश का नागरिक यह जान गया है कि कुछ पार्टियां यही चाहती हैं कि भारत कमजोर और अन्य बड़े राष्ट्रों का पिछलग्गू बना रहे, ताकि वे कभी मजहब, कभी जाति, तो कभी अमीरी-गरीबी के नाम पर चुनाव जीतते रहें। वे चाहते ही नहीं कि भारतीयों का स्वाभिमान जगे।

'मैं भी चौकीदार' भारत की समस्त बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने का एक सामाजिक अभियंत्र है। मोदी जी ने कहा कि भ्रष्टाचार के खिलाफ हम सब चौकीदार, यानी देश में न कोई भ्रष्टाचार करेगा और न कोई इसको बढ़ावा देगा। मोदी सरकार के छोटे-छोटे फैसलों ने हजारों करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार पर पूरी तरह रोक लगा दी। यदि लोग फैसला कर लें और भ्रष्टाचार के प्रति चौकीदार की भूमिका में आ जाएं, तो फिर भारत उन देशों की श्रेणी में खड़ा हो जाएगा, जिसे लोग आज इकोनामिक सुपर पावर कहते हैं। इसी तरह यदि देश के नागरिक गंदगी, बलात्कार, चोरी, छुआछुत और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी चौकीदार की भूमिका में खड़े हो जाते हैं, तो देश की तस्वीर बदल सकती है।

यह राजनीतिक नहीं, सकारात्मक सोच पर आधारित एक सामाजिक अभियान है। यह चुनाव जीतने के उद्देश्य से गढ़ा गया नारा नहीं, लोगों के दिल जीतने का अभियान है। इसकी गूंज सिर्फ चुनाव तक ही सुनाई नहीं देगी, आने वाले कई वर्षों तक यह अभियान चलता रहेगा और देश का भविष्य नए तरीके से लिखा जाएगा।

हरियाली और रास्ता

मिताली, ताबूत और सफलता

मिताली नामक एक लड़की की कहानी, जिसे ताबूत में सफलता और सुख का राज मिला।

मिताली रोज की तरह उस दिन भी अपने ऑफिस थोड़ी देर से पहुंची। कंपनी के हालात भी बहुत अच्छे नहीं थे। ऑफिस में घुसते ही देखा, एक बड़ा-सा पोस्टर लगा था। उसने सोचा, फिर कोई अल्टीमेटम दिया होगा कंपनी वालों ने। लेकिन वह तो एक शोक संदेश था। लिखा था, बड़े खेद के साथ आपको सूचित किया जा रहा है कि कंपनी के एक प्रतिष्ठित कर्मचारी का कल शाम निधन हो गया। उनकी लंबी बीमारी के चलते कंपनी नुकसान में चल रही थी। आप से अनुरोध है कि आज शाम पांच बजे उनके पार्थिव शरीर को आखिरी श्रद्धांजलि देने के लिए कैफेटेरिया में उपस्थित रहें। मिताली हैरान थी। जब वह अंदर पहुंची, तो सारे लोग इसी बारे में चर्चा कर रहे थे। आखिर ऐसा कौन-सा शख्स है, जिसकी वजह से कंपनी नुकसान में चल रही थी। सबको शाम पांच बजे का बेसब्री से इंतजार था। शाम पांच बजे जब सब लोग कैफेटेरिया में घुसे, तो देखा, एक बड़ा ताबूत वहां रखा था और आसपास कई अगरबत्तियां जल रही थीं। लोग एक-एक करके उस ताबूत के पास जा रहे थे। लेकिन ताबूत के अंदर देखते ही हर किसी के चेहरे पर सफेदी छा जा रही थी। ऐसा लग रहा था, जैसे किसी ने शॉक दे दिया हो। कुछ ही देर में मिताली का नंबर आया। जब उसने ताबूत के अंदर झांका, तो देखा कि वह खाली था, और नीचे एक शीशा लगा था, जिसमें उसे अपनी शक्ल दिखाई दे रही थी। उस शीशे के नीचे लिखा था, कंपनी तभी विकास करेगी, जब आप विकास करेंगे। आपकी सफलता, खुशी और विकास का अगर कोई जिम्मेदार है, तो वह आप खुद हैं। कंपनी, बॉस, या दोस्त बदलने से आप नहीं बदल सकते। आशा है आपका नया जीवन विकासशील होगा। उस दिन के बाद से मिताली की कंपनी में एक नया जोश भर गया।

हम अपनी खुशी बाहर ढूंढते हैं, जबकि वह हमारे भीतर होती है।

खुली खिड़की

भारत में मोबाइल डाटा सस्ता

हमारे देश में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है, इसकी मुख्य वजह यह है कि हमारे यहां एक जीबी मोबाइल डाटा का मूल्य बहुत सस्ता है, यानी 13.73 रुपये, जबकि स्विट्जरलैंड में इसका मूल्य 1,387.18 रुपये है।

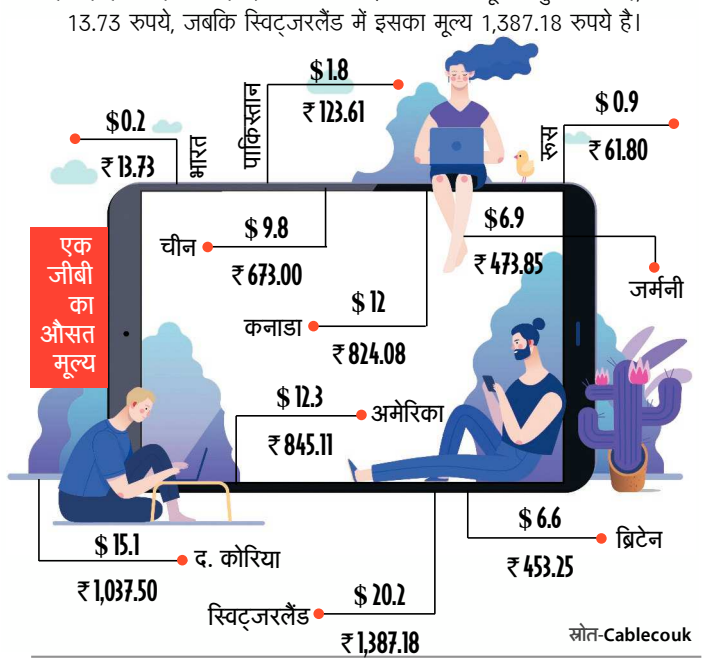

स्रोत-Cablecouk

करुणा और प्रेम

दक्षिण भारत के एक नगर में तिरुविशनल्लूर अय्यावय्यर नामक एक निश्छल हृदय के विद्वान ब्राह्मण रहते थे। उन्होंने धर्मशास्त्रों का गहन अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि करुणा और प्रेम ही वस्तुतः धर्म का सार है।

एक बार उनके पिता के श्राद्ध का दिन था। ब्रह्मभोज की तैयारी हो रही थी। श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को जो भोजन दिया जाता है, उसे विष्णु भोजन कहा जाता है। ब्राह्मण श्राद्ध-तर्पण करने आने ही वाले थे कि अय्यावय्यर दूब लेने घर के पिछवाड़े गए। उन्होंने देखा कि वहां भूख से व्याकुल एक व्यक्ति खड़ा है। उसने कहा, चार दिन से कुछ नहीं खाया है। जूठा-बासी जैसा भी भोजन हो, देकर मेरे प्राण बचाइए। यह सुनकर अय्यावय्यर का हृदय द्रवित हो उठा। वह घर के अंदर गए और श्राद्ध की जो सामग्री पत्ते पर रखी थी, लाकर उस भूखे व्यक्ति को भेंट कर दी। पुरोहित ने यह देखा, तो वह क्रोधित होकर बोला, पंडित होकर भी बिना भोग लगाए तुमने वह सामग्री भिखारी को देकर घोर पाप किया है। अब तुम्हें प्रायश्चित करना पड़ेगा, तभी हम ब्राह्मण भोजन करेंगे। ब्राह्मणों ने भोजन करने से इनकार कर दिया। तभी अचानक आकाशवाणी हुई कि तुम्हारे पिता तुम्हारी करुणा भावना से प्रसन्न हैं। उन्होंने भोजन प्राप्त कर लिया है। यह सुनकर पुरोहित अय्यावय्यर के चरणों में झुककर बोला, तुम धन्य हो, भूखे में भगवान के दर्शन करने वाला ही सच्चा धर्मात्मा है।

सत्संग

-संकलित